International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 440-441

ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल में देवता सौन्दर्य

वागीश मिश्र

शोध छात्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

सभी वैदिक संहिताओं में ऋक् संहिता प्राचीनतम है। ऋक् संहिता दश मण्डलों में विभक्त है। इसमें 85 अनुवाक, 1028 सूक्त, 20,552 मंत्र हैं। पाश्चात्य विद्वान इन दश मण्डलों में से द्वितीय मण्डल से सप्तम मण्डल तक को ही प्राचीनतम मानते हैं। इन्हीं मण्डलों को वंश मण्डल भी कहा जाता है। इन मण्डलों में से द्वितीय मण्डल में कुल तैंतालिस (43) सूक्त हैं, जो विभिन्न देवों को समर्पित हैं। प्रस्तुत आलेख में द्वितीय मण्डल में वर्णित देवों के सौन्दर्य स्वरूप पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जा रहा है।

द्वितीय मण्डल के प्रथम दस सूक्तों में अग्नि की स्तुति की गई है।[1] ऋग्वैदिक देवताओं में अग्नि का महत्व इसी बात से स्पष्ट है कि ऋक् संहिता का प्रथम मंत्र ही अग्नि देवता को समर्पित है।[2] ऋक् संहिता में अग्नि को समर्पित दो सौ सूक्त हैं। इन्द्र के बाद किसी भी देवता को समर्पित यह सर्वाधिक सूक्त संख्या है। ऋक् संहिता के द्वितीय मण्डल में प्राप्त अग्नि का विवरण इस प्रकार है– अग्नि की उत्पत्ति द्युलोक, जल, पाषाण घर्षण वनों व ओषधियों से होती है।[3] अग्नि की पाषाण से उत्पत्ति का समर्थन करती हुई एक ऋचा अन्यत्र भी प्राप्त होती है, जहाँ इन्द्र द्वारा अग्नि की उत्पत्ति पाषाण के मध्य से किया जाना बताया गया है।[4] अग्नि की उत्पत्ति दो अरणियों के मध्य से भी होती है।[5] अग्नि को वनों या ओषधियों का भ्रूण भी कहा गया है।[6] नाना प्रकार की ओषधियों में ये गुप्त रूप से विद्यमान रहते हैं।[7] इन्हें मनुष्यों का स्वामी कहकर आह्वान किया गया है।[8] एक स्थल पर इन्हें अध्वर्यु व ब्रह्मा के समान बताया गया है।[9] साधुओं का मनोरथ पूर्ण करने वाला होने से इन्हें विष्णु कहा जाता है।[10] अग्नि ही विविध पदार्थों के सृष्टिकर्ता हैं। अग्नि की वरूण, मित्र, अर्यमा, सूर्य कहकर भी स्तुति की गयी है।[11] स्तोता इन्हें सजातीय (बन्धु) व मित्र रूप में प्राप्त करने की इच्छा करता है। अग्नि मनुष्यों को आश्रय प्रदान करने वाले महान् बली हैं।[12] इसके अतिरिक्त अग्नि को रूद्र, मरुतों का बल, पूषादेव, सविता, भग देव, अदिति कहकर भी प्रार्थना की गयी है। इनसे प्रार्थना की जाती है कि वे मित्र हितैषी व विध्नकारक बनकर स्तोता की रक्षा करें।[13] अग्नि का स्वरूप अत्यंत तेजोमय है। फिर भी सामीप्य के कारण वे स्तुति योग्य हैं।[14] सैकड़ों वर्ष की आयु के प्रदाता होने से वे 'इडा' हैं।[15] इनका स्वरूप सदा बढ़ने वाला है। ये प्रचुर अन्न, ऐश्वर्य के प्रदाता हैं। समस्त देवगण अग्नि द्वारा ही आहूतियों को प्राप्त करते हैं। अग्नि देव मनुष्यों की स्तुतियों से प्रशंसित होते हैं व अतिथि की भांति पूजित हैं।[16] अग्नि स्तोताओं को श्रेष्ठ घोड़े व गौएँ प्रदान करते हैं।

अग्नि कुशाओं में स्थित हैं व स्तोतागण द्वारा आह्वाहित किये जाने पर घृत युक्त कुशाओं पर स्थान ग्रहण करते हैं। इनका मूल स्थल घी है, यही कारण है कि इन्हें घृत में सिंचित करते हैं। इसके अतिरिक्त एक स्थल पर इनका स्थान मेघों में तडितरूप में बताया गया है।[17] अग्नि को उत्तम रूप से शासन करने वाला भी कहा गया है। ये श्रेष्ठ नेतृत्व के प्रदाता व उत्तम पथ पर ले जाने वाले हैं।[18]

द्वितीय मण्डल में अग्नि के लिये विविध उपाधियों का प्रयोग किया गया है। यथा–मेधावी, प्रदीप्त, पोषक, बलशाली, तेजस्वी, उत्तम बल से युक्त, सत्यवक्ता, धनाधिपति, प्रशास्ता, गृहपति इत्यादि।

वैदिक वाङ्मय में इन्द्र का महत्व किसी से छिपा नहीं है। ऋक् संहिता में इन्द्र से सम्बन्धित 250 सूक्त इनकी महनीयता के प्रमाण हैं। ऋक् संहिता के द्वितीय मण्डल में इन्द्र से सम्बद्ध बारह सूक्त स्वतंत्र रूप से प्राप्त होते हैं।[19] इसके अतिरिक्त अन्य देवताओं के साथ भी इनकी स्तुति की गयी है। इन्द्र अपने वीरतापूर्ण कार्यों के लिये जाने जाते हैं। स्तोता पर इनके उपकारों का वर्णन सर्वत्र विद्यमान है। इन्द्र हाथों में वज्र धारण किये हुये दर्शाये गये हैं। इनका वज्र श्वेत है या चमकीला है।[20] इसी वज्र की सहायता से इन्होंने दुष्टों का नाश किया है। इनके द्वारा किये गये वीरतापूर्ण कार्य इस प्रकार है–इन्होंने द्युलोक पर चढ़ाई करने वाले अहि नामक दैत्य का वध किया।[21] वृत्र नामक असुर का वध किये जाने की चर्चा से सम्पूर्ण ऋक् संहिता व्याप्त हैं। संभवतः वृत्र का नाश किया जाना इनका सर्वाधिक वीरतापूर्ण कार्य है, अतः इसकी चर्चा अधिकाधिक है।[22] इन्द्र वर्षा के देवता हैं, वृत्र मेघों का प्रतीक है, वृत्र वध मेघों से जल बरसाने की ही काव्यात्मक अभिव्यक्ति है। द्वितीय मण्डल में ही दस्युओं को हटाकर सूर्यातप प्रदान किये जाने का भी विवरण प्राप्त होता है। यहाँ दस्युओं को मेघ मानना ही समीचीन होगा।[23] इन्द्र द्वारा 'अहि', वृत्र, दस्युओं के वध के फलस्वरूप जल की प्राप्ति होती है। अतः अहि, वृत्र, दस्युओं को मेघों का प्रतीक मानने में कोई बुराई नहीं है। इन्द्र द्वारा किये गये अन्य वीरतापूर्ण अभियान इस प्रकार हैं–इन्द्र ने त्वष्टा पुत्र विश्वरूप का वध किया।[24] त्रित के शत्रु अर्बुद[25] को मारा, बल को मारा[26], शंबर[27], रोहिणी[28], सहस्रवसु[29], दृभीक[30], उरण[31], क्रिवी[32], प्रिपु[33], नमुचि[33], रूधिक्रा[33], आदि दैत्यों का वध किया। इन्द्र द्वारा किये गये इन विजय अभियानों के पीछे मुख्य कारण उपकार है। यह कार्य इन्द्र स्वार्थ के लिये नहीं अपितु उपकार के लिये करते हैं।

असुरों द्वारा दभीति ऋषि का अपहरण किये जाने पर क्रोधित इन्द्र उन असुरों का वध करते हैं।[34] इस युद्ध में इन्द्र चमुरि तथा धुनि का वध करते हैं।[35] इन्द्र ने कुत्स, आयु, अतिथिग्व ऋषियों के द्वेषियों का वध किया। इन वीरतापूर्ण कार्यों से इतर इनका स्वरूप महान दानी भी है। पंगु व प्रज्ञा चक्षु परावृक् ऋषि अपने ब्याह हेतु लायी गयी कन्याओं की खोज में जब गहरे जल में गिर गये तब इन्द्र इन्हें वहाँ से निकालकर पैर तथा आँखे प्रदान करते हैं।[36] इन कार्यों के अतिरिक्त इन्द्र के सोमपान की चर्चा भी बहुतायत मिलती है। सोमपान से इन्द्र की शक्ति बढ़ती है।[37] इन्द्र ने सोमपान करने के पश्चात् ही वृत्र का वध किया।[38] इन्द्र से स्तोतागण प्रार्थना करते हैं कि वे सोमपान कर यज्ञ में उपस्थित रहें।[39] सोमपा विशेषण इन्द्र के लिये ही प्रयुक्त है।[40] स्वयं सोमपान के अतिरिक्त सोम रस निकालने वाले स्तोता को भी इन्द्र संरक्षण प्रदान करते हैं।[41] इन्द्र सदैव सोम की कामना करते हैं।[42] सोम प्राचीनकालिक स्फूर्तिदायक, बलप्रदाता पेय रहा होगा जो इन्द्र को अत्यधिक प्रिय था।

इन्द्र ने विशाल आकाश को मापा, पृथिवी को स्थिर किया।[43] द्युलोक को मस्तक पर धारण किया व पर्वतों को स्थिर किया।[44] इन्द्र की भुजाऐं बलशाली हैं। यह वज्र के समान हैं।[45] इन्द्र की शक्ति मनुष्यों के द्वारा दिये गये हव्य से बढ़ती हैं। इन्द्र ने प्रकट होते ही देवताओं को अभीभूत कर लिया।[46] इन्द्र के उदर में सोम, हाथ में वज्र व शरीर में तेज है।[47] इन्द्र का रथ विशाल है, जो दस सौ (1000) अश्वों द्वारा खींचा जाता है। कहीं–कहीं अश्वों की संख्या दो, चार, छः, आठ, ... सौ भी बतायी गयी है।[48] इनके अश्व द्रुतगामी हैं व गर्जना में मेघों के समान हैं।[49] इन्द्र प्रलय काल में समस्त जगत को खा जाते हैं व अकेले सम्पूर्ण विश्व के स्वामी हैं।

इन्द्र के सूक्तों के पश्चात् द्वितीय मण्डल में वृहस्पति को समर्पित चार सूक्त प्राप्त होते हैं। प्रकृति के प्रत्येक क्षेत्र में परिव्याप्त दिव्य चेतना शक्ति का दर्शन करने वाले व उसे देवता के रूप में महत्ता प्रदान करने वाले आर्यों का ध्यान किसी ऐसे देवता की धारण की ओर जाना स्वाभाविक था, जिसे वे प्रतिदिन विभिन्न देवों की स्तुति में बनाये जाते हुए सूक्तों व वाणी के अन्य व्यापारों का अधिपति मान सकें। यहीं से वृहस्पति या ब्रह्मणस्पति का उद्भव होता है। इनके नाम के यह दोनों रूप कभी–कभी एक ही सूक्त के विभिन्न मन्त्रों में एकान्तरित होते हैं।[50]

वृहस्पति या ब्रह्मणस्पति गणों के भी गणपति व श्रेष्ठ कवि के रूप में पूज्य हैं। स्तोतागण इन्हें सम्पूर्ण ज्ञान का प्रकाशक मानते हैं।[51] इन्हें श्रेष्ठ पथ प्रदर्शक व संरक्षक के रूप में दिखाया गया है। कहीं–कहीं इन्हें जल प्रदाता के रूप में दिखाया गया है। इन्होंने पर्वतों में से गायों को स्वतंत्र किया व इन्द्र की सहायता से वृत्र द्वारा रोके गये जल को बरसने के लिये प्रेरित किया।[52] इनका वाहन रथ है। इनके हाथों में सुगमता से खींचा जाने वाला धनुष भी है।[53]

ऋक् संहिता के द्वितीय मण्डल में इन्द्र, अग्नि, वृहस्पति के अतिरिक्त रूद्र, आदित्य, वरूण को समर्पित एक–एक सूक्त भी प्राप्त होते हैं। यदि ऋक् संहिता को काव्यात्मक रचना माना जाय तो द्वितीय मण्डल में यह काव्यात्मकता अत्यंत श्रेष्ठ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ऋग्वेद–2/1/1 ... 2/1/10
2. ऋग्वेद–1/1/1
3. त्वमग्ने द्युभिस्त्वमाशुशुक्षणिस्त्वमद्भ्यस्त्वमश्नस्परि।
त्वं वनेभ्यस्त्वमोषधीभ्यस्त्वं नृणां नृपते जायसे शुचिः।– ऋग्वेद–2/1/1
4. यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान।– ऋग्वेद–2/12/3
5. ऋग्वेद–2/4/3
6. ऋग्वेद–2/10/3
7. ऋग्वेद–2/1/1
8. ऋग्वेद–2/1/1
9. ऋग्वेद–2/1/2
10. ऋग्वेद–2/1/3
11. ऋग्वेद–2/1/4
12. ऋग्वेद–2/1/5
13. ऋग्वेद–2/1/9
14. ऋग्वेद–2/1/11
15. ऋग्वेद–2/1/11
16. ऋग्वेद–2/2/8
17. ऋग्वेद–2/4/2
18. ऋग्वेद–2/8/2
19. ऋग्वेद–2/1/11 ...2/1/22
20. ऋग्वेद–2/11/4, 2/12/10
21. ऋग्वेद–2/11/5, 2/11/2, 2/11/20
22. ऋग्वेद–2/11/9, 2/11/10–18, 2/12/3, 2/14/2
23. ऋग्वेद–2/11/8
24. ऋग्वेद–2/11/19
25. ऋग्वेद–2/11/20, 2/14/4
26. ऋग्वेद–2/12/3
27. ऋग्वेद–2/12/11
28. ऋग्वेद–2/12/12
29. ऋग्वेद–2/13/8
30. ऋग्वेद–2/14/3
31. ऋग्वेद–2/14/4
32. ऋग्वेद–2/17/6
33. ऋग्वेद–2/14/5
34. ऋग्वेद–2/15/9
35. ऋग्वेद–2/15/9
36. ऋग्वेद–2/13/12, 21/15/7
37. ऋग्वेद–2/11/11
38. ऋग्वेद–2/11/10
39. ऋग्वेद–2/11/15
40. ऋग्वेद–2/12/13
41. ऋग्वेद–2/12/14 2/12/6
42. ऋग्वेद–2/14/1
43. ऋग्वेद–2/12/, 2/15/2, 3
44. ऋग्वेद–2/17/2, 5
45. ऋग्वेद–2/12/13
46. ऋग्वेद–2/12/1
47. ऋग्वेद–2/16/2
48. ऋग्वेद–2/18/4–6
49. ऋग्वेद–2/11/17
50. ऋग्वेद–2/23
51. ऋग्वेद–2/33/2
52. ऋग्वेद–2/22/4
53. ऋग्वेद–2/24/4